यू० पी० बैंक इम्प्लाईज यूनियन

पंजीकरण संख्या–538
ए.आई.बी.ई.ए. से संबद्ध
केन्द्रीय कार्यालय : 106/107 द्वितीय तल, ब्लाक संख्या 26/2/4, संजय प्लेस, आगरा–282002
पत्र व्यवहार : 3/17, विभव नगर, आगरा–282 001, मो0: 09837472750
फोन/फैक्सः (नि0) 0562–4044383, **E-mail: mmrai_2509@yahoo.co.in & mmrai2509@gmail.com**

परिपत्र संख्या : 2016–19/63/2018 **दिनांक :** 09.06.2018

सभी प्रान्तीय पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों
जिला इकाईओं के मंत्रियों/अध्यक्षों हेतु

प्रिय साथियों,

साथी के.जे. जोसेफ का लेख

हम यहाँ एआईबीईए के परिपत्र संख्या 28/62/2018/25 दिनांक 07.06.2018, जो साथी के.जे. जोसेफ द्वारा लिखे गए लेख के विषय में है, का अनूदित सार आप सभी की सूचना एवं संज्ञान हेतु नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

अभिवादन सहित,
आपका साथी,

(मदन मोहन राय)
महामंत्री

प्रिय साथियों,

आश्वस्त रहें – भ्रमित न हों – अधिक कार्रवाईयों के लिए तैयार रहें

हम यहाँ साथी के जे जोसेफ, जिन्हें प्यार से बैंक कर्मचारियों के बीच अंकल जो के रूप में जाना जाता है, द्वारा लिखे गए लेख को प्रस्तुत कर रहे हैं।

साथी जोसेफ बैंक कर्मचारी आन्दोलन के दुर्लभ हीरा हैं। वह 1951 में बैंक ऑफ इण्डिया स्टाफ यूनियन, बॉम्बे के महामंत्री थे। वह 1953 में फैडरेशन ऑफ बैंक ऑफ इण्डिया स्टाफ यूनियन्स के महामंत्री बने। वह 1955 से 1962 तक एआईबीईए के सहायक सचिव रहे। वह 1960 से दो सत्रों के लिए तमिलनाडु बैंक इम्पलाईज फैडरेशन के अध्यक्ष रहे। वह 1948 से, अर्थात् जब उन्होंने बैंक में सेवा आरम्भ की, पिछले 70 वर्षों से एआईबीईए आन्दोलन के साथ जुड़े हुए हैं। यहां तक की आज 95 वर्ष की वृद्ध आयु में भी, वह बैंकों और एआईबीईए में होने वाले घटनाक्रम पर दृष्टि रखे हुए हैं।

आज जब हम वेतन पुनरीक्षण को प्राप्त करने के लिए अपने संघर्षों के मध्य में हैं, जब हम आईबीए–सरकार गठबंधन के विरूद्ध संघर्षों में लगे हुए हैं, हम पाते हैं कि ऐसे लोग हैं जो बैंक कर्मचारियों को भ्रमित करना चाहते हैं, और ऐसे लोग हैं जो भ्रमित होने को तैयार हैं।

सोशल मीडिया में पोस्ट करने और पेस्टिंग करने से परेशान, साथी जोसेफ ने यह लेख लिखा और हम अपनी इकाईओं तथा सदस्यों के लाभ के लिए इसे पुर्नप्रसारित कर रहे हैं।

अभिवादन सहित,

आपका साथी
ह0..
सी.एच. वेंकटचलम्
महामंत्री

अंकल जो की अपील

प्रिय मित्रों और साथियों,

आश्वस्त रहें – भ्रमित न हों

बधाईयाँ! साधुवाद! यह 48 घण्टे की हड़ताल के लिए बैंक कर्मचारियों द्वारा एकता और सहज प्रतिक्रिया की एक शानदार अभिव्यक्ति थी। गर्व और खुशी की खबरों के साथ, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ! मैं इस आन्दोलन की धड़कन और रोमांच महसूस करता हूँ।

हमारे देश में, हम गवर्नरों, जजों, सांसदों, विधायकों और अन्य लोगों के वेतन और भत्तों का संशोधन देखते हैं जो तुलनात्मक रूप से संपन्न हैं। लेकिन बैंक कर्मचारियों को, जो उद्योग की अर्जक आस्तियां हैं, को 5 साल बाद, दान द्वारा नहीं, कानूनी समझौते के अनुसार हकदार पुनरीक्षण से इंकार किया जाता है। हमने क्या पाप किया है?

एकमात्र गलती है कि हम समाज के एक प्रबुद्ध, शिक्षित, सभ्य और सामाजिक रूप से जागरूक वर्ग हैं और हमारी जुझारू एकता कॉर्पोरेटों और सरकार के लिए एक असुविधा और आंख का कांटा है। सरकार ने निदेशक मण्डल में हमारे प्रतिनिधित्व से इंकार द्वारा ''अपराध'' के लिए हमें पहले ही दण्डित किया है जिसके लिए हम देश के कानून द्वारा हकदार हैं।

हमें अपनी एकता को और मजबूत करना होगा तथा हमारे संघर्ष के औजारों तथा युद्ध के हथियारों को तेज करना होगा। घटनाक्रम के अंत में, हम अपनी देयतायें प्राप्त करेंगे और जीत हासिल करेंगे।

हमारी संयुक्त ताकत और शक्ति के सामने, सरकार की सोची हुई, कठोर चुप्पी टूट जायेगी, क्योंकि, यदि आवश्यक होगा, दीवार की ओर धकेले जाने के बाद, हम उद्योग में संपूर्ण ठहराव का आह्वान करेंगे और पूरी तरह से राष्ट्र की आर्थिक गतिविधि को पंगु बना देंगे। हमें उम्मीद है कि सरकार हमें कगार पर धक्का नहीं देगी।

कोई गलती न करें। यह धमकी नहीं है लेकिन दिल की गहराईयों से, लाखों जागृत बैंक कर्मचारियों का वादा है।

इस बीच, मुझे एक सीमांत समूह द्वारा कहे गये असंगत नोट्स सुनाई पड़ते हैं। ये वे मुद्दे हैं जिन्हें उन्होंने उठाया है। सबसे पहले, हमें केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए लागू वेतन आयोग रिपोर्ट के कार्यान्वयन की मांग करनी चाहिए। वे बैंक कर्मचारियों या केवल वेतनमान के लिए इस रिपोर्ट का यांत्रिक प्रत्यारोपण चाहते हैं।

मेरा सीधा सवाल यह है कि, उनमें से कितने लोगों ने वास्तव में इस रिपोर्ट को पढ़ा है ? उनमें से कितनों ने वेतन स्वरूप के विकास – न कि क्रांति – के बारे में अध्ययन किया है, कर्मचारियों के विभिन्न वर्गों जैसे कि कारखाना मजदूरों, रेलवे, पी एण्ड टी, केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, सार्वजनिक क्षेत्र, बैंकों, बीमा तथा अन्य वर्गों के लिए यह कैसे निकला है?

पूरी विनम्रता के साथ, मैं उनसे अपील करता हूँ कि वर्तमान में पहुंचने के लिए विगत में झांकें और भविष्य की ओर बढ़ें।

किसी भी मामले में, यह उनके लिए लाभप्रद होगा जो हमारे देश में वेतन निर्धारण पर विभिन्न आयोगों और समितियों द्वारा उपलब्ध कराई गई अध्ययन सामग्री के माध्यम से नेता बनने की ख्वाहिश रखते हैं।

एक और महत्वपूर्ण बिन्दु है। 1966 में हमारा पहला द्विपक्षीय समझौता हमारे देश में श्रम संगठन आन्दोलन

जारी पृष्ठ 3

के इतिहास में पहला उद्योगवार अखिल भारतीय समझौता था। बैंक कर्मचारी जो सामूहिक सौदेबाजी के नायक और मशाल धारक थे सामूहिक सौदेबाजी के पल्ल धारक (ताबूत वाहक) नहीं बनना चाहिए था।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने लिखा था कि '' हम सभी चीजों के अन्त के बारे में जानते हैं पर आंरभ के विषय में नहीं जानते''। यह हमारी समस्या है।

दूसरा बिन्दु यह है कि सेवानिवृत्त कर्मचारी जो आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं को बदला जाना चाहिए। ये सेवानिवृत्त कर्मचारी कौन हैं? वे पेशेवर नहीं हैं। वे संघर्ष के माध्यम से परिपक्व, इस शक्तिशाली आन्दोलन के शानदार उत्पाद हैं। ज्ञान के भंडार और अनुभव के शस्त्रागार हैं। वे ऐसे ''व्यक्ति'' हैं जिन्होंने अपना होमवर्क अच्छा किया और बड़ी कठिनाईयों के साथ यूएफबीयू का गठन किया – एक इंद्रधनुष रचना की तरह रंगों का आकर्षक और रोमांचक मिश्रण – जो आन्दोलन की अगुआई करता है। ये वो ''व्यक्ति'' हैं जिन्होंने पहले के द्विपक्षीय समझौतों की वार्ता और पटकथा लिखी जिस पर आलोचक बैंकों की सेवा में इस अवस्था में पहुंचे और यूएफबीयू के आंदोलन और नेतृत्व की निंदा करने के लिए सोशल मीडिया में ''फैलानेवाली टिप्पणी' करते हुए वर्तमान सुखद विशेषाधिकारों का आनंद लेते हैं।

प्रिय मित्रों! नेतृत्व के लिए कोई शॉर्टकट नहीं है। कोई कड़ी मेहनत, शिक्षा और समर्पण के माध्यम से इसे प्राप्त करता है। यूएफबीयू का वर्तमान नेतृत्व युवाओं और अनुभव का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है। क्या पेड़ की शाखा को काटना बुद्धिमानी है जिस पर कोई बैठा है ?

दूसरा बिन्दु यह है कि क्या हमें उच्च कार्यवाही का सहारा लेना चाहिए और वह भी तुरंत।

सख्त वास्तविकताओं को देखो जो हम पर नजरें गड़ाए हुए हैं। उद्योग कोमा में है। आईबीए का कोई अध्यक्ष नहीं है जिसका कारण सबको ज्ञात है। वित्त मंत्री धीरे–धीरे अपनी बीमारी से ठीक हो रहे हैं। (आईये उन्हें शुभकामनायें दें और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करें)। केवल रिक्ति को भरने के लिए ''बदली'' मंत्री हैं। प्रधानमंत्री देश में होने वाली घटनाओं से अप्रभावित हैं। क्योंकि वह आम लोगों के ध्यान को हटाने और बांटने के अपने कौशल को तेज करने में व्यस्त हैं, जिसे उन्होंने एक कला के रूप में परिपूर्ण किया है। इसके अलावा, 2019 के निकट आ पहुंचे हैं।

सरकार का रवैया स्पष्ट रूप से कॉर्पोरेट समर्थक और कामगार विरोधी है जिसे बीएमएस द्वारा भी स्वीकार किया है जो कि सत्ताधारी दल का हिस्सा है। जनता की प्रतिक्रिया अधूरी है और भावनात्मक, क्षणिक मुद्दों तक सीमित है। आधा सच बोलना मुख्य व्यवसाय है। विरूपण पेशा है। ध्यान को बांटना शौक है। इस तरह सत्तारूढ़ शक्तियां पनपती और जीवित रहती हैं।

एक पुरानी कहावत है कि ''झूठ से लड़ना आसान है; लेकिन आधे–सच से लड़ना बहुत कठिन है!''

इस पृष्ठभूमि और राजनैतिक वातावरण के विरूद्ध हमें पूरी शक्ति से कार्रवाईयों को आरंभ करने से पहले दो बार सोचना चाहिए। हम अपनी मोटरकार को टॉप गियर में चालू नहीं करते हैं। हमें मार्ग की परिस्थितियों और रोडमैप को समायोजित करना होगा।

मैं 70 से अधिक वर्षों तक एक आधार सैनिक के रूप में इस आन्दोलन के साथ चला हूँ। मेरी याददाश्त में कभी भी, हमने इस तरह की कठिन और जटिल स्थिति का सामना नहीं किया है।

जारी पृष्ठ 4

समय की आवश्यकता एकता है। बारूद को गीला न होने दें! आग को जलाये रखें! जब लोहा गरम हो तब प्रहार करें। जब हम प्रहार करें, गहरी नींद में रहने वाली शक्तियों को उठाने के लिए कठोर प्रहार करें।

आईबीए केवल एक मुखौटा है। वास्तविक चेहरा वित्त मंत्रालय है। इसलिए, हमें उस शक्ति की सामर्थ्य को कम नहीं समझना चाहिए जिसके विरूद्ध हम लड़ते हैं। हमें अपनी ताकतों को एक साथ रखना चाहिए और उचित समय पर कार्य करना चाहिए।

इस आंदोलन में सभी बाधाओं को दूर करने और परिणामों को प्राप्त करने के लिए एक निहित शक्ति और आंतरिक बल है।

प्रचलित परिस्थितियों की वजह से प्रक्रिया में थोड़ी देर हो सकती है। हमारी नई पीढ़ी के कर्मचारी और युवा हमारे दृष्टिकोण को समझेंगे और इसकी सराहना करेंगे।

जो लोग किनारे पर बैठते हैं उन्हें सोचने और मार्ग बदलने के लिए भड़काया जा सकता है। जीवन और मृत्यु का संघर्ष – जिसमें हम अभी लगे हुए हैं, ''फेसबुक'' के माध्यम से नहीं लड़ा जाता। मैं विनम्रतापूर्वक उनसे मुख्यधारा के साथ जुड़ने और मिलने तथा इस महान आंदोलन के आकर्षण और सौहार्द को महसूस करने का अनुरोध करता हूं जिसने तुम्हें और मुझे बनाया है जो कि आज हम हैं।

दृढ़विश्वास, साहस और कट्टर दृढ़ संकल्प के साथ सशस्त्र रहें, आगे बढ़ें। अंतिम जीत हमारी है।

नीले आसमान से परे, अरब सागर की गर्जनकारी लहरों के पीछे, हरी घाटियों और भूरे पहाड़ों से आगे, हम एक भोर देखते हैं – आने वाले कल की भोर – जो हमेशा हमारे लिए है – कामगार वर्ग।

एआईबीईए, यूएफबीयू तथा एकता के ध्वज को ऊँचा रखें

चरण–दर–चरण आगे बढ़ें।

हम कामयाब होंगे.....

हार्दिक अभिवादन सहित,

स्नेह सहित आपका,

जो

के.जे. जोसेफ